Chapter. 1

अध्याय-1

राजस्थान में ब्रजभाषा काव्य का संक्षिप्त इतिहास

प्रथम अध्याय

राजस्थान में ब्रजभाषा काव्य का संक्षिप्त इतिहास

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा कवि या लेखक अपने हृदय के भावों को व्यक्त करते हैं, भाषा को कहीं भी बाँधकर नहीं रखा जा सकता। भाषा का माधुर्य अपने आप कवि को अपनी ओर खींच लाता है उसी प्रकार ब्रजभाषा सिर्फ अपने क्षेत्र तक सीमित नहीं रही उसके माधुर्य ने ब्रजभाषा की भौंगोलिक सीमाओं से कहीं अधिक विस्तृत और विशाल बना दिया। परिणामतः इसके हमें कई नाम मिलते हैं भाषा या भाखा, पिंगल, मध्यदेशी, ग्वालियरी और अन्तर्वेदी आदि। इस भाषा के आधुनिक सीमाओं में निम्न प्रदेश माने जाते हैं, ''उत्तर प्रदेश के मथुरा, अलीगढ़, आगरा, बुलंदशहर, एटा, मैनपुरी, बदायुँ तथा बरेली के जिले, पंजाब के गुड़गाव जिले की पूर्वी पट्टी : राजस्थान में भरतपुर, धौलपुर, करौली तथा जयपुर का पूर्वी भाग, मध्यप्रदेश में ग्वालियर का पश्चिमी भाग, उत्तर प्रदेश के पीलीभीत, शाहजहाँपुरा, फर्रुखाबाद, हरदोई, इटावा और कानपुर जिले भी ब्रज प्रदेश में सम्मिलित कर लिए गये हैं।''

14वीं से 17वीं शती के बीच ब्रजभाषा का रचना क्षेत्र उत्तर-दक्षिण के विस्तृत भू-भाग में भी पहुँच गया - **डॉ. विश्वनाथ प्रसाद ने बताया है कि ''ब्रज के वंशी-ध्वनि के साथ अपने पदों की अनुपम झन्कार मिलाकर नाँचने वाली मीरा राजस्थान की थी, नामदेव महाराष्ट्र के थे, नरसी गुजरात के थे, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भोजपुरी भाषा क्षेत्र के थे। ब्रजभाषा को अपनाकर एक से एक कवियों की रससिद्ध वाणी से**

उसे इतना समृद्ध बना देने वाले पुष्टि–मार्ग के आचार्य भी दक्षिणात्य थे। बिहारी में भोजपुरी, मगही और मैथिली भाषा क्षेत्रों में भी ब्रजभाषा के कई प्रतिभाशील कवि हुए हैं।''[1]

वस्तुतः यह कहना गलत नहीं कि भाषा का माधुर्य भौंगोलिक सीमाओं में बँधकर नहीं रहता वह काव्य के द्वारा शब्दों के रूप में हर भाव को प्रकट कर देता है और इस कार्य को कवि और लेखकों ने साबित भी किया है। जैसे नानक से लेकर दक्षिण के हरिदासों तक की कविता ब्रजभाषा कहलाती है और अपभ्रंश पश्चिमी अपभ्रंश ही थी और यही वस्तुतः उत्तर भारत की साहित्यिक भाषा का रूप ले रही थी इसलिए हम ब्रजभाषा के किसी न किसी रूप में बंगाल, आसाम, उड़ीसा से लेकर गुजरात तक काव्य रचना कर पाते हैं।

राजस्थान में भी ब्रजभाषा साहित्य का विशाल भण्डार है। जिसमें अनेक कविरत्नों ने अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा ब्रजभाषा को चमत्कृत किया है। जिसमें काव्य के अनेक रंग देखने को मिलते हैं, परम्परा का भक्ति और शृंगार के रंग में रंगा काव्य, तो आधुनिक युग के मानव और समाज से जुड़ा काव्य। छन्द, अलंकारों से अलंकृत काव्य तो दूसरी ओर प्रबंध, मुक्तक काव्य भी रचे गये हैं।

अतः यह कह सकते हैं कि राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों ने ब्रजभाषा के अनेक रूपों को अपनाते हुए इस परम्परा को अविरल गति से बढ़ाते रहे हैं और बढ़ा रहे हैं।

राजस्थान में जिन कवियों ने राजाश्रय में रचनाएं रची हैं आज भी उनके नाम याद किए जाते हैं। डॉ. राजकुमारी कौल ने अपने शोध ग्रन्थ ''राजस्थान के राजघरानों की हिन्दी सेवा'' में विस्तार से उदयपुर के 23, जोधपुर के 46, बीकानेर के 27, किशनगढ़ के 5, जयपुर के 14, बूँदी के 15, जैंसलमेर के 3, अलवर के 8, भरतपुर के चार और करौली के 6 काव्यकरन की सेवा का वर्णन किया है।

डॉ. प्रभुदयाल मीतल ने ब्रजभाषा की उन्नति के विषय में डीग में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में यह कहा - **''ब्रज मंडल के सर्वमान्य देवता और पुष्टिमार्ग के आराध्य श्रीनाथजी का स्वरूप वाईकाल में गोवर्धन सौं हटाय के राजस्थान में लायौ गयौ है। जो अब नाथद्वारा में बिराजमान ए। श्री द्वारिकानाथजू**

कौ सरूप वाके निकटवर्ती काँकरौली में ए। पुष्टिमार्ग के दूसरे प्रमुख सरूप कामाँ, कोटा और राजस्थान के अन्य नगर में हैं। गौड़ीय सम्प्रदाय के कई स्वरूप जयपुर के मन्दिरन में प्रतिष्ठित ऍं। श्री मदन मोहनजी का स्वरूप करौली के देवालय की शोभा बढ़ाए रहओ ऐ। इन देवतानके मन्दिरन में जो पुस्तकालय ऍं बिनमें ब्रजभाषा के बाजार ग्रन्थ सुरक्षित ए। इनमें से केवल काँकरौली की ग्रंथ सम्पदा सौ ही कुछ परिचै रहा ए। जाकौ कारन वहाँ के गोलोकवासी गोस्वामी श्री ब्रजभूसन लाल जी और विद्वान श्री कठमणि शास्त्री का विद्यानुराग ओ।''[2]

इस प्रकार मीतल जी ने यह बात सिद्ध कर दी कि ब्रजभाषा के अनुराग ने राजस्थान में भी अपनी मधुरता का असर दिखा दिया है। कवियों की वाणी से ब्रजभाषा में काव्य की शुरुआत हो गई है।

राजस्थान के ब्रजभाषा के इतिहास में किशनगढ़ के नागरीदास, जयपुर के ब्रजनिधि और जोधपुर के जसवन्द सिंह और मानसिंह आदि ने ब्रजभाषा में बहुत ही सुन्दर लिखा है।

नागरीदास जी के पद संगीतात्मकता युक्त होते है। उन्होंने गुरू के चरणों की महत्ता बताते हुए लिखा है -

धन धन श्री गुरु देव गुसाईं।
वृन्दावन रस मग बरसायौ, आवट वाट छुटाई॥
भूले है बहुतक जन मन के फिरत अंध की नाई।
'नागरीदास' वसाए कुँजनि, सबै छुड़ाय दाहिनी वई॥[3]

'ब्रजनिधि' के उपनाम से विख्यात जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह ने राधा-कृष्ण और प्रकृति को बहुत सुन्दर ढंग से वर्णित किया है। उनकी कृति 'प्रीति लता' मैं दो सौ पक्तियों में लिखा है। उदाहरण द्रष्टाव्य है।

कजरारी अँखियान में बस्यौ रहत दिन रात।
प्रीतम प्यारे हैं सखी, या ते स्यामल गात॥ [4]

जोधपुर के जसवन्त सिंह ने ''भाषाभूषण'' नामक ग्रन्थ में काव्य का सौन्दर्य माने जाने वाले रस और अलंकार की विवेचना ब्रजभाषा में की है। जो राजस्थान ब्रजभाषा इतिहास की स्वर्ण देन है। वानगी द्रष्टाव्य है -

अलंकार सब्दार्थ के, कहे एक सौ आठ।
किए प्रकट भासा विसै, देखि संस्कृत पाठ।।[5]

इसी प्रकार जोधपुर के महाराज मानसिंह ने छासठ ग्रंथ लिखे और पृथ्वीराज पिंगल और डिंगल दोनों में रचना की। अतः यह कहा जा सकता है कि राजस्थान के इतिहास में ब्रजभाषा में लिखने वाले राजा महाराजाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जो अविरल गति से बहते हुए। ब्रज साहित्य कोश को दिन प्रतिदिन बढ़ा रहा है जिनमें राजस्थान में ब्रजभाषा में साहित्य की रचना करते वाले अनगिनत कविगण हैं जिन्होंने अपने कौशल्य द्वारा ब्रजभाषा साहित्य को समृद्ध किया। जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण ब्रजभाषा के कवियों की संक्षेप में हम यहाँ चर्चा करेंगे।

1. श्री अक्षय सिंह रत्नू का जन्म 24 दिसम्बर 1910 को काली पहाड़ी असरोल के पास हुआ। इन के पिता का नाम श्री झुझार सिंह है। साहित्य रत्न इनकी शैक्षणिक योग्यता है। लेखनी की भाषा ब्रजभाषा और राजस्थानी है। इन के प्रकाशित कृतियाँ है। 'अक्षय भारत दर्शन', 'अक्षय केसरी प्रताप चरित्र', 'अक्षय जय स्मृति'। इनकी प्रतिभा के फलस्वरूप राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी वर्ष 87-87 और अलवर दरबार और मत्स्यराज से सम्मानित किया गया है। कवित्त, दोहा, सवैया लेखन में इनकी विशेष रुचि रही है। **इनका पता** - अक्षय कुटीर पारीक कॉलेज मार्ग बनी पार्क जयपुर, राजस्थान।

2. श्री अर्जुनलाल कवि इन का जन्म 26 नवम्बर 1936 को 'करौली' में हुआ। इनके पिता 'श्री श्याम लाल' हैं। इनकी लेखन भाषा ब्रज और हिन्दी है। इनकी प्रकाशित कृतियाँ है 'अनेकार्थ दोहावली', 'कीर्तन भाव', 'खनिया बारहमासी'। इनको राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा वर्ष 92-93 सम्मानित किया गयाहै। इनको व्यंग्य, नीति और धर्म आदि विषयों पर दोहे लिखने में विशे, रुचि रही। **इनका पता** - चटीकना, मोहल्ला करौली, राजस्थान।

3. गुरुजी कमलाकर तैलंग जी का जन्म 28 जनवरी 1915 को ग्राम रेवड़ ग्वालियर में हुआ। इनके पिता का नाम 'श्री बलवन्त राव तैलंग' है। इनके लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रज है। प्रकाशित कृतियाँ है। 'त्रिवेणी', 'प्रबोधनी','सूरदास' भावात्मक उद्धव शतक आदि। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा 1986 में सम्मानित किया

गया था। साथ ही 1932-33 ई. स. से आरम्भ मासिक पत्रिका 'प्रकाश' जयपुर के सम्पादन कार्य में भी जुड़े रहे और छोड़कर चले गये। **इनका पता** – आनन्दबाड़ी, सूरजपोल गेट बाहर, जयपुर।

4. श्री गोरधन सिंह 'मधु' जी का जन्म कोटड़ा दीपसिंह (कोटा) में आश्विन शुक्ल पक्ष तेरस स. 1975 वि. में हुआ। लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रजभाषा रही। प्रकाशित कृतियाँ है 'राधा अभिलाषा' माधुरी काव्य आदि इसके अलावा स्फुट काव्य अप्रकाशित है। कवि सम्मेलनों, साहित्यिक शिविर और गोष्ठियों में रुचि रही। आकाशवाणी प्रसारण गद्य-पद्य में भी अपनी कार्यकुशलता का योग दिया। **इनका पता है** – कोटड़ी गोरधन पुरा, बनजारों के मंदिर के सामने, कोटा, राजस्थान।

5. श्री गोपेश शरण शर्मा 'आतुर' जी भरतपुर राजस्थान में 14 अक्टूबर 1934 नाम 'श्री गोपाल शरण शर्मा' है। लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी और अंग्रेजी है। प्रकाशित कृतियाँ 'निर्मल मिलन', एक और एक ग्यारह, लोहागढ़ ललकार काव्य कलानिधि, गल्पगुच्छ आदि है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर और राजस्थान साहित्य अकादमी जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** – 56 कृष्णनगर, भरतपुर, राजस्थान है।

6. पं. गंगादत्त शास्त्री का जन्म करौली राजस्थान में माघ सुदी पूनौ संवत 1980 वि. में हुआ। 'श्री भंवर लाल इनके पिता हैं। इनकी लेखन भाषा राजस्थानी उपबोली सौधवाड़ी और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृतियाँ 'भागवतायन' है। हनुमान पचासा, शुकरामायण, नारायण ब्रजभाषा कवच अप्रकाशित है। इनको राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा 1996-1997 में तथा संस्कृत अकादमी से सम्मानित किया गया। साथ ही भूषण पुरस्कार और हरित ऋषि सम्मान भी दिए गए। **इनका पता** – 1360 जयलाल मुंशी का रास्ता श्रीकृष्ण लीला गंग शोध संस्थान जयपुर, राजस्थान।

7. श्री गौरी शंकर आर्य का 21 अगस्त 1921 को चौमहला (झालवाड़ा) में जन्म हुआ। इनके पिता का नाम 'श्री भँवरलाल' है। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी है प्रकाशित कृतियाँ सुख का आधार, प्राथमिक ज्ञान, विज्ञान अन्त्याक्षरी आदि है। इन को राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर और जय साहित्य संसद जयपुर व राजस्थान द्वारा सम्मानित किया गया है। **इनका पता** – कवि कुटीर, चौमहला (झालवाड़ा)

राजस्थान।

8. श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी जी का जन्म 06 अगस्त 1923 को अशोक नगर जिला गुना मध्यप्रदेश में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी है। प्रकाशित ग्रन्थ तात्या टोपे, साधना सोपान, तांत्या टोपे की फाँसी, प्रश्नोत्तरी, अट्ठारह सौ गागर आदि। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर, पूर्व साहित्य अकादमी दिल्ली आदि से सम्बन्धित रहे। इनको जिला प्रशासन कोटा 1981, हिन्दुस्तान समाचार 1982, हाड़ौती शिक्षा प्रसारिणी स. कोटा 1990, राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर और अ.भा.सा.प. द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मानित किए गए। **इनका पता** – 1 का 56-56, महावीर नगर विस्तार, कोटा, राजस्थान।

9. श्री गोपाल प्रसाद मुद्‌गल जी का जन्म 2 जुलाई 1931 डीग भरतपुर में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी है। इनकी प्रकाशित कृतियाँ उगता सूरज, अच्छा बालक, वक्त की आवाज, फूटी चूड़ियाँ, अमर सुहाग, कंचन करत खरौ, दादी का मौसर, बुआ की धर्मशाला, मन से मन को जोड़, गीत गीत रोशनी जागो तभी सवेरा, प्रेरक पच्चीसी चारपाई आदि। इनको राज्य सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में 1978, कविश्यामा बाबा पुरस्कार हाथरस 1995 सुरेश चतुर्वेदी पुरस्कार अलीगढ़ 1997, लायन्स क्लब डीग 1994, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अलावा आकाशवाणी मथुरा, आगरा, दिल्ली, बाडमेर, जैसलमेर एवं जोधपुर दूरदर्शन से भी जुड़े रहे। कवि सम्मेलन सफल गीतकार, संचालक और आयोजक रहे। **इनका पता** – पाण्डेय मोहल्ला, डीग, भरतपुर, राजस्थान है।

10. श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय' का जन्म 17 मार्च 1911 में बयाना भरतपुर में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी रही। प्रकाशित कृति 'चिन्तन के स्वर' तथा राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार में कुछ कवित्त, सवैया, दोहा और कुण्डलियाँ है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा 1986 में सम्मानित भी किया गया। **इनका पता** – खादी भंडार के ऊपर, मथुरा गेट, भरतपुर, राजस्थान।

11. डॉ. त्रिभुवननात चतुर्वेदी जी का जन्म कोटा राजस्थान में 18 सितम्बर 1928

में हुआ। इनके पिता का नाम पं. मदन मोहन चतुर्वेदी है। लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रज रही। प्रकाशित कृतियाँ सुरभि के चरण, उपाजित क्षण, क्षमा कीजिए, ममता की समाधि, ब्रह्माण्ड का उपमान, सब देखते हैं, नाच आदि हैं। हिन्दी ब्रजभाषा के सशक्त, बहुपठित व्यंग्यकार भी है और कल्पना, ज्ञानोदय, माध्यम, सरस्वती, बासंती, मधुमती सप्त सिंधु आदि पत्रिकों में कविता, व्यंग्य और कहानी प्रकाशित होती रहती है। इनकी प्रतिभा को नजर में रखते हुए राजस्थान ब्रजभाषा से सम्मानित किया गया। **इनका पता** – 161 विद्युत नगर बी, अजमेर रोड, जयपुर।

12. श्री दामोदर लाल वर्मा 'सुदाम' जी का जन्म 1 दिसम्बर 1925 को काँकरोली राजस्थान में हुआ। हिन्दी, ब्रज और राजस्थानी इनकी लेखन की भाषा है। प्रकाशित कृतियाँ बच्चों का राज्य, मैं समझा कुछ और भीलराणी महतराणी, और सुदामा सतसई है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा वर्ष 1997 में सम्मलित किया गया। **इनका पता** – लाल बंगला, काँकरोली राजस्थान है।

13. कविराज नंदकिशोर ब्रजदास जी का जन्म 1 जनवरी 1944 में बिशनपुर (जयपुर) में हुआ। लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रज रही। प्रकाशित कृतियाँ हरिनाम चालिसा, श्री सद्गुरु चालीसा, हरिलीला शतक, हरिनाम शतक चालीसा आदि है। भारती मंदिर जयपुर द्वारा 'साहित्य निधि' उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा 95-96 में सम्मानित किया है। **इनका पता** – 136, करणीकुंज, राधागोबिन्द कालोनी, डहर के बालाजी, जयपुर, राजस्थान।

14. श्री नाथूलाल महावर जी का जन्म 03 जुलाई 1937 को माँगरोल जिला बाराँ में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी और राजस्थानी रही। प्रकाशित कृतियाँ मन वृन्दावन श्रुति सुदा, माटी म्हारा देसकी आदि है विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेखन और दूरदर्शन पर कविता प्रसारण होती रही। सं.1997 में जय साहित्य संसद में सम्मानित किए गए, स्वर्णकार समाज कोटा, राजस्थान पाठक मंच जयपुर और हिन्दी दिवस पर 1998 में राज्यपाल द्वारा सम्मानित किए गए। **इनका पता** – कृष्णायन 124 मुक्तानंद नगर गोपालपुरा बाई पास, जयपुर, राजस्थान।

15. श्री प्रभुदास वैरागी जी का जन्म नाथद्वारा राजस्थान में 25 जनवरी 1935 को हुआ। लेखन की भाषा ब्रज हिन्दी और मेवाड़ी रही। प्रकाशित कृति श्री नाथद्वारा का

सांस्कृतिक इतिहास, गंगादास सतसई आदि। इनको पूज्यपाद ति. श्री गोविन्दलाल जी महाराज द्वारा पुरस्कृत, सुप्रसिद्ध गीतकार 'श्री नीरज' अभिनन्दन-पत्र, राजस्थानी विकास मंत्र जालोर द्वारा सन् 1964 में डॉक्टरेट की मानद उपाधि, साहित्य मंडल द्वारा श्रीनाथ जी पाटोत्सव पर ''ब्रजभाषा विभूषण'' की पदवी, अखिल भारतीय कला सं.सा. परिषद मथुरा द्वारा ''साहित्यालंकार'' की मानद उपाधि दी गई। **इनका पता**- पुराने पोस्ट आफिस के पीछे, अस्पताल मार्ग, नाथद्वारा, राजस्थान।

16. श्री पदम शास्त्री का जन्म 17 दिसम्बर 1935 में पो. सिंगाली जि. (पिथौरीगढ़ - अल्मोड़ा) में हुआ। लेखन की भाषा संस्कृत, हिन्दी और ब्रजभाषा रही। प्रकाशित कृति सिनेमाशतकम्, स्वराज्यम्, लेनिनामृतम्, मदीया, सोवियतयात्रा, पद्यपञ्चतन्त्रम् और विश्व कथा शतकम् है। अखिल भारतीय विद्वत्परिषद द्वारा 'विद्याभूषण' आशुकवि मानद उपाधि, 1975 में उत्तर प्रदेश शासन का विशिष्ट साहित्यिक पुरस्कार, 1976 में सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, व्याख्यान, कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध कार्य 1986 में नैनीताल विश्व विद्यालय की छात्रा मञ्जु लोहनी ने पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की। 'स्वराज्यम्' काव्य पर राजस्थान विश्वविद्यालय से लघुशोध की। **इनका पता** - 128, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा मार्ग, जयपुर, राजस्थान।

17. श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखा' जी का जन्म 09 अप्रैल 1939 को काँकरोली जिला राजसमन्द में हुआ। लेखन की भाषा राजस्थानी, हिन्दी और ब्रजभाषा रही। प्रकाशित कृतियाँ अनोखी फैशन फिरंगी, चीन पाक को ललकार, अनोखा संकीर्तन, बालगीत माला, लय के रहे पड़ाव घनेरे, आखर मंडिया मांडणा, श्री द्वारकाधीश चालीसा, अनोखा आखर गीत आदि है। इनको राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान, साहित्य मण्डल नाथद्वारा से ब्रज विभूषम सम्मान, जिला स्काउट एण्ड गाइड सम्मान जिला साक्षरता समिति राजसमन्द से सम्मानित और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा 1998 में सम्मानित किया गया। इसके साथ अकाशवाणी जयपुर से काव्य प्रसारण में कार्यरत रहे। **इनका पता** - जाट गली, काँकरोली, जिला राजसमन्द, राजस्थान।

18. श्री बुद्धिप्रकाश पारीक जी का जन्म 31 दिसम्बर 1922 में जयपुर में हुआ। लेखन की भाषा हिन्दी, उर्दू, ब्रज, राजस्थानी है। प्रकाशित कृतियाँ चूँटक्या, चबड़का, तिरसा, कलदार, इन्दर सूँ इन्टर्व्यु, नाक की करामात आदि। इनको मारवाड़ी सम्मेलन

बम्बई से राजस्थान का सर्वोच्च पुरस्कार मन्त्री देवी जोशी साहित्य पुरस्कार दिया गया। **इनका पता** – 2486/20 गोविन्द राजियों का रास्ता, पुरानी बस्ती, जयपुर राजस्थान।

19. बागरोदी बल्देव 'सत्य' जी का जन्म 13 अगस्त 1912 को बीकानेर में हुआ। लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रज रही। प्रकाशित कृतियाँ नाथद्वारे का सांस्कृतिक इतिहास, श्रीनाथ सेवा, रसोदधि, पुष्टि रसालश्रीनाथ चिह्न भावना, आरती सरूप, सात रूप भावना, विट्ठलनाथ के वचनामृत आदि है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी से 1990-91 में सम्मानित किया गया। **इनका पता** – टी/48 रेल्वे कॉलोनी, बीकानेर, राजस्थान।

20. डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी जी का जन्म 22 दिसम्बर 1936 में वृन्दावन में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी और उर्दू रही। प्रकाशित कृतियाँ श्रीनाथ अठसई, विदुला, सौमित्रा, चैतन्य महाप्रभु, गाँव की साँझ, हिमर्थल और साक्षी रहना तुम आदि है। महाकवि बिहारी पुरस्कार से 'मित्र परिषद्' जयपुर द्वारा सम्मानित किया, साहित्य गौरव, साहित्य शिरोमणी, साहित्य श्री, संस्कृति श्री जयपुर श्री ब्रजभाषा विभूषण जैसे अलंकरणों द्वारा सम्मानित किया गया।

21. श्रीमती माधुरी शास्त्री जी का जन्म दिनांक 22 जुलाई 1938 को कानपुर उ.प्र. में हुआ। पिता का नाम श्री रत्नगर्भ तैलंग है। इनकी लेखन भाषा राजस्थानी, हिन्दी और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृतियाँ बाल उपन्यास 'स्वर्ण कमल', 'तुम्हारे लिए', 'शिशु-गीत किलकारी (कविताएँ)', माँ का आशीर्वाद (कथा-संग्रह), परी का तोहफा, चीनू की बिल्ली अतिरूपा (प्रेम कथाएँ), बड़े घर की बेटी (उपन्यास), भाग्य का खेल (उपन्यास), वसुंधरा (उपन्यास), देहरी की दरारें (कथा संग्रह) आदि। राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान, ब्रजभाषा अकादमी की सामान्य सभा की सदस्या रही और हिन्दी प्रतिष्ठान मंच की उपाध्यक्षा भी रही। इनके नाटक, वार्ता, कहानी और कविताओं का जयपुर आकाशवाणी से प्रसारित होती रही। इनके लेख, कविताएं, कहानी राजस्थान पत्रिका, इतवारी पत्रिका, नवज्योति, भास्कर, नवभारत, धर्मयुग, सरिता और गृहशोभा में भी प्रकाशित होते रहे। 'भारत मंदिर जयपुर' से साहित्य निधि उपाधि से अलंकृत किया गया। **इनका पता** – सी-8, पृथ्वीराज रोड, जयपुर,

राजस्थान।

22. श्री मांगीलाल भव्य का जन्म सन् 1913 को डग, झालवाड़, राजस्थान में हुआ। इनके पिता का नाम श्री भँवरलाल था लेखन की भाषा सौधवाड़ी (राजस्थान की उपबोली), ब्रजभाषा, उर्दू और हिन्दी है। प्रकाशित कृतियाँ सच्चा देशप्रेम, भ्रमर गुंजर, स्वाधीनता का शंखनाद आदि है। इनको राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा 1997-98 में सम्मानित किया गया है। **इनका पता** – करबला रोड, लाडपुरा, कोटा, राजस्थान।

23. डॉ. मदनगोपाल शर्मा का जन्म दिनांक 22 मई 1926 में सामोद (जिला जयपुर) में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी, राजस्थानी और उर्दू है। प्रकाशित कृतियाँ रवीन्द्र पद्य कथा, गोखा उभी गोरड़ी, मधुगन्ध, पंख सुरीले खैयाम के जाम, शतक त्रय, राधिका शतक, मीराँ, वनस्थली का वानप्रस्थी और रस की अभिव्यंजनाएँ आदि। इनको सेठ श्री गोकुलचन्द अग्रवाल, सेठ चिरंजीलाल मित्र परिषद् झोटवाडा और जय साहित्य संसद से सम्मानित किया गया। आकाशवाणी द्वारा गीत, काव्यपाठ भी प्रसारित होते रहते हैं। **इनका पता** – राम कुटीर, गोपालपुरा रेल्वे क्रोसिंग के निकट, जयपुर, राजस्थान।

24. मधुकर राव 'मधुर' तैलंग जी का जन्म दिनांक 17 सितम्बर 1948 में जयपुर में हुआ। लेखन की भाषा खड़ी बोली और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृति अनुभूति शतक, मधुर शतक आदि हैं। गुरू कमलाकर स्मृति केन्द्र की स्थापना कर संचालन कर रहे हैं। **इनका पता** – सी 16 आनन्दवाड़ी, गलता रोड, जयपुर, राजस्थान।

25. श्री यशवन्त सिंह जी का जन्म दिनांक 30 नवम्बर 1921 में ग्राम कोठरिया में हुआ। पिता का नाम श्री मानसिंह जी है। लेखन की भाषा हिन्दी, राजस्थानी अवधी और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृतियाँ प्रभु श्रीनाथ की वंदना, रामचन्द्र जी डोंगरे महाराज की वन्दना, रामचन्द्र जी डोंगरे महाराज की वन्दना, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप, गो. ति. गोविन्दलाल की वन्दना, प्रभु श्री नवनीत प्रिय का लाल बाग पधरावणी आदि है। अध्यात्म, काव्य रचना में और इतिहास-सामाजिक साहित्य में विशेष रुचि रही है। अरविन्द सिंह जी मेवाड़ के जन्मोत्सव पर सम्मानित किया गया है। **इनका पता** – कोठारिया, तहसील नाथद्वारा, जि. राजसन्द, राजस्थान।

26. श्री यशकरण खिड़िया जी का जन्म दिनांक अप्रैल 1904 को जैतपुर तह. आसींद (भीलवाड़ा) में हुआ। पिता का नाम श्री शक्तिदान सिंह है। लेखन की भाषा ब्रज, डिंगल व पिंगल रही। प्रकाशित कृतियाँ आर्त्त आहे, खारीबाढ़ वर्णन, शिवाशिव महिमा और यशकरण दोहावली आदि हैं। महाराणा मेवाड़ फाउन्डेशन से कुंभा पुरस्कार और सन् 1992-93 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया है। **इनका पता** - शिवा आश्रम, पुराना बस स्टेण्ड, आजादनगर, भीलवाड़ा, राजस्थान।

27. श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी का जन्म दिनांक 10 मई 1929 में हुआ। पिता का नाम श्री रामनाथ है। लेखन की भाषा संस्कृत, हिन्दी और ब्रज है। प्रकाशित कृतियाँ युग तत्व प्रवेशिका गद्य, युग तत्व प्रकाशिका, युगल गीति शतकम्, श्री स्तवरत्नांजलि राधामाधव शतकम्, श्री सर्वेश्वर सुधा बिन्दु आदि अनेक ग्रंथ हैं। इनको 1986 में राजस्थान सरकार संस्कृत विभाग द्वारा संस्कृत शिक्षा क्षेत्र में प्रशंसनीय लोक सेवा के लिए पुरस्कृत और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** : सलेमाबाद अजमेर, राजस्थान।

28. डॉ. रामानन्द तिवारी, भारतीनन्दन जी का जन्म दिनांक 03 अगस्त 1919 को सोरों में हुआ। इनके पिता का नाम वैद्य प्यारेलालजी है। लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत रही। प्रकाशित कृतियां पार्वती महाकाव्य परिणय, सेनानी, भारतीय दर्शन की भूमिका, सत्यं शिवं सुन्दरं, काव्य का स्वरूप, सावित्री, चन्द्रगुप्त, अहिल्या आदि अनेक ग्रंथ हैं। इनको वर्ष 1986 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा पर शोध कार्य किया। इनका पता सम्मानित, मीरा पुरस्कार, मंगला प्रसाद पुरस्कार, महाराणा कुंभा पुरस्कार, डढ़ालमिया पुरस्कार मनीषि उपाधि एवं संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया। इसके अलावा ''शंकराचार्य के आकार दर्शन'' पर शोध कार्य किया। **इनका पता** - 14 कृष्णपुरी, गोल बाग रोड, भरतपुर, राजस्थान।

29. डॉ. रामकृष्ण शर्मा जी का जन्म 25 अक्टूबर 1926 को ग्राम सुनहरी तह. बैर (भरतपुर) में हुआ। लेखन की भाषा हिन्दी, ब्रज और अंग्रेजी है। प्रकाशित कृतियाँ भारत गाथा, काव्यानंद, सभ्यता सूर्य भारत सतसई, काहे को झगरौ, गुरुनानक आदि हैं। इनको 87-89 में ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। 1993 में

सोमनाथ पुरस्कार, अंचरतत्न, साहित्य मनीषी ब्रजविभूति से अलंकृत किया गया। **इनका पता** – सरस्वती सदन, मोहल्ला कौड़ियान, भरतपुर (राजस्थान) है।

30. श्री रमेश चन्द्र 'चन्द्रेश' जी का जन्म डीग भरतपुर में 24 अप्रैल 1939 में हुआ। पिता का नाम श्री बाल-मुकुन्द भट्ट है। इन के लेखन की भाषा ब्रजभाषा और खड़ी बोली है। प्रकाशित कृतियाँ मुक्त हारिका, हिन्दी रहस्य चन्द्रिका, प्रकाश की प्रतीक्षा, भूख, दुखिया का लाल, अन्तरिक्ष की यात्रा, दुर्गा संकीर्तन और लठावन माहात्म्य आदि है। सन् 1997-98 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया पत्र-पत्रिका में इनके लेख प्रकाशित होते रहे। **इनका पता**– नीमघटा मौहल्ला, डीग भरतपूर (राजस्थान) है।

31. श्री राधाकृष्ण 'कृष्ण' जी का जन्म भरतपुर में दिनांक 14 जुलाई 1928 को हुआ। पिता का नाम श्री मदनलाल है। लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृतियाँ श्री राधागोपीनाथ परिचय काव्य शतक और काव्य कलश आदि है। इन को 1987-88 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। विभिन्न कवि सम्मेलनों में भाग लेना इन की रुचि रही। **इनका पता**– पुरानी बस्ती, जयपुर (राजस्थान) है।

32. श्री रामदत्त शर्मा जी का जन्म भरतपुर में दिनांक 15 सितम्बर 1926 को हुआ। इन के पिता का नाम श्री जगन्नाथ प्रसाद शास्त्री है। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी है। प्रकाशित कृतियाँ त्रिविधा, काव्य कला निधि, हिन्दी व्याकरण, हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण, सूक्ति संकलन आदि हैं। सन् 1992-93 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** – सी.91, रणजीत नगर, भरतपुर राजस्थान है।

33. श्री रामनाथ कमलाकर जी का जन्म भादौ कृष्ण दसमी संवत 1980 को कोटा में हुआ। पिता का नाम श्री रामप्रताप है लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी, उर्दू और राजस्थानी हैं। प्रकाशित कृतियाँ एकोडहं, हंस तीर्थ मेरे गीत तुम्हारे चरन और दिलकश दौर आदि रचनाएँ है। इन को राजस्थान साहित्य अकादमी, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। मित्र परिषद झोटवाड़ा से महाकवि बिहारी पुरस्कार और साहित्य संसद, वरिष्ठ नागरिक परिषद द्वारा सम्मानित किया

गया। **इनका पता**- 'अनुग्रह' डी-114, सिवाड़ ऐरिया, बापू नगर, जयपुर (राजस्थान) में हुआ।

34. डाक्टर रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ जी का जन्म दिनांक 03 जनवरी 1941 में हुआ। पिता का नाम श्री जयन्ती प्रसाद कुलश्रेष्ठ जी है। लेखन की भाषा हिन्दी, अंग्रेजी और ब्रज रही। प्रकाशित कृतियाँ आचार्य हरिचरणदास और उनकी मोहन लीला, आधुनिक काव्य धारा, संचयन और राधा-कृष्ण भक्ति कोष आदि। इन को स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रेडियो नाट्य साहित्य पर हरियाणा सरकार, शारदालिपि पर नागरी लिपि परिषद नई दिल्ली और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** - 1-2 जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान) है।

35. श्री विष्णु दत्त शास्त्री जी का जन्म 19 मार्च 1907 को हुआ। पिता का नाम श्री चिरंजीवलाल जी मिश्रा हैं। लेखन की भाषा ब्रज, संस्कृत और हिन्दी है। प्रकाशित कृतियाँ श्री सद्गुरु स्तुति पुष्पांजलि, श्री सदगुरू वंदना, श्री हेड़ाखण्डी सप्तसंती, श्री सदाशिव चरितामृत, श्री दुर्गसप्तसती, उत्सव विलास आदि अनेक कृतियाँ है। वर्ष 1997 को राज्सथान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** - श्री अटलदासजी का मंदिर, राजगढ़ (अवलर) है।

36. डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक जी का जन्म भरतपुर में दिनांक 06 जुलाई 1943 में हुआ। पिता का नाम श्री राधा शरण पाठक है। लेखन की भाषा अंग्रेजी, हिन्दी और ब्रज रही। प्रकाशित कृतियाँ ब्रजशतदल 17 अंकों का सम्पादन राजस्थान की विभूति देवीशंकर तिवारी, मोनोग्राफी आदि है. साथ ही राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी हिन्दी साहित्य सम्मेलन जयपुर, सदस्य साहित्य मंडल नाथद्वारा, ब्रजमंडल समाज जयपुर आदि संस्थाओं से सम्बन्धित सम्पर्क में रहे। **इनका पता** - सी 266 भाभा मार्ग, तिलक नगर जयपुर (राजस्थान) हैं।

37 डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय का जन्म ग्राम अधासी जिला, इटावा (उ.प्र.) में 07 जनवरी 1925 को हुआ। पिता का नाम श्री गयादीन उपाध्याय हैं। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी है। प्रकाशित कृतियां गांधी शतक, भ्रमरगीत, सन्त वैष्णव काव्य पर तंत्रिक प्रभाव, 10 कविता संग्रह, उपन्यास और नाटक प्रकाशित हुए। इन को विभिन्न संस्थों द्वारा सम्मानित भी किया गया जैसे राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर,

हिन्दी संस्थान लखनऊ उत्तर प्रदेश, बिहार राजभाषा परिषद, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, इटावा और जयपुर से नागरिक अभिनंदन, राजभाषा विभाग चम्पालाल राका खारक्रोव यूनी. उक्रेन से ओनरेबिल प्रोफेसर, हिन्दी साहित्य सा. प्रयाग, साहित्य वाचस्पति, कानपुर से उपन्यास भारती, बिहार में कुलाधिपति, बिहार से महामहोपाध्याय की उपाधियों द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** – 7-25 जवाहर नगर जयपुर (राजस्थान)।

38. सुश्री शकुन्तला रेणु जी का जन्म झालरा-पाटन में 24 जून 1921 में हुआ। पिता का नाम पं. गिरधर शर्मा है। लेखन की भाषा ब्रज, हिन्दी, गुजराती, उर्दू और हाड़ौती हैं। प्रकाशित कृतियाँ साहित्य प्रारंभिका, उन्मुक्ति, सतीसीता, आश्रमज्योति, जयमंगला, मधु संजीवनी, और मुखवास और मानवी आदि। 1987-88 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता**–विवेक भारती संस्थान, नवरत्न सरस्वती सदन, पो. झालरापाटन जिला झालवाड़ा (राजस्थान)।

39. श्री शिवदत्त शर्मा जी का जन्म दिनांक 30 जनवरी 1918 को नगर जिला भरतपुर में हुआ। लेखन की भाषा हिंदी और ब्रज है। पिता का नाम स्व. गोविन्द शर्मा है। प्रकाशित कृतियाँ यमुने, राजस्थान नहर, वियुजन्ती, ब्रजेन्द्र वैभव और खौल उठी भारती धरती आदि। इनको वर्ष 1998-99 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सोमनाथ काव्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। **इनका पता** 242 कीर्तिनगर, टोंका रोड जयपुर (राजस्थान) है।

40. श्री शक्तिदान कविया जी का जन्म ग्राम बिराई तहसील शेरगढ़ जि. जोधपुर में 17 जुलाई 1940 को हुआ। पिता का नाम श्री गोविन्द रामजी कविया है लेखन की भाषा हिन्दी अंग्रेजी, ब्रज और राजस्थानी है। प्रकाशित कृतियाँ श्री करनी यश प्रकाश, अली जी रो अनुवाद, धरती धणी रुपाली आदि हैं। इन को विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया जैसे राजस्थान साहित्य अकादमी से राज पध हेतु, भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता, राजभाषा साहित्य, संस्कृति अकादमी बीकानेर से सर्यमल्ल मीसंण एिकर पुरस्कार, राज रत्नाकर नई दिल्ली, बम्बई से राजस्थान पुरस्कार, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर, द्वारका सेवा निधि ट्रस्ट जयपुर साहित्य अकादमी नई दिल्ली तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया

गया। **इन का पता** : 2-पोलो, जोधपुर राजस्थान।

41. श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र जी का जन्म भरतपुर में 10 अक्टूबर 1927 को हुआ। पिता का नाम श्री गोपाल दत्त मिश्र है। लेखन की भाषा ऋतुल्लास, रास नायक नायकन आदि हैं। सन् 1998 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** – मो. गोपालगढ़ भरतपुर (राजस्थान) हैं।

42. श्री सियाराम सक्सेना प्रवर जी का जन्म 1 सितम्बर 1921 को कम्पिल, फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ। पिता का नाम श्री चिरंजीवलाल सक्सेना है। लेखन की भाषा राजस्थानी, हिन्दी और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृतिया प्रवर सतसई, प्रवर दोहावली, रंग माधुरी, हरिरस सिन्धु, ब्रजकांत कवित्त, अनुराग गीतावना और ब्रजबाड़ी आदि हैं। इन को 1997-98 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, 1995 में हास्य मार्तण्ड उपाधि बड़ौत और ब्रज भाषा विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। **इनका पता** – उ. ग. 17 हाउसिंह बोर्ड, शास्त्रीनगर जयपुर, राजस्थान है।

43. श्री सत्येन्द्र चतुर्वेदी जी का जन्म भरतपुर में 14 फरवरी 1932 को हुआ। लेखन की भाषा ब्रज और हिन्दी है प्रकाशित कृतियाँ हिन्दी साहित्य और भाषा का इतिहास, साहित्य का मर्म और धर्म, उदय शंकरभट्ट व्यक्तित्व वृतित्व एवं जीवनदर्शन, जीवन की चुनौती और पं. जवाहर लाल नेहरू जीवनी आदि। वर्ष 1993 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। **इनका पता** – 23, चन्द्र पथ, सूरज नगर पश्चिम, सिविल लाइन्स जयपुर राजस्थान है।

44. डॉ. हरदत्त शर्मा 'सुधाशु' जी का जन्म 1 मार्च 1934 में माँढ़ण (बहरो-अलवर) में हुआ। पिता का नाम श्री मुसद्दी लाल शर्मा है। लेखन की भाषा हिन्दी और ब्रजभाषा है। प्रकाशित कृतियाँ सिसकीत वेदना, आग और आँसू और मेरौ काव्य संग्रह आदि। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया है। **इनका पता** – 109, गोविन्द नगर राज भट्ट के पास दिल्ली रोड, अलवर (राजस्थान) है।

45. श्री हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास' जी का जन्म गुन्सार (कुम्हेर) राजस्थान में 28 अक्टूबर 1932 में हुआ। लेखन की भाषा ब्रज रही। प्रकाशित कृतियाँ श्री गोपीजन वल्लभाय, श्री यमुनाष्टक एवं संपादन श्री मदनमोहन शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व, श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य संक्षिप्त परिचय, श्री गुसाई विठ्ठलनाथ संक्षिप्त परिचय, श्री महाप्रभु

एवं पुष्टिमार्ग और श्री वल्लभाख्यान आदि हैं। इन को शिल्परतन, पुष्टिमर्मज, एवं अनेक संस्थान द्वारा सम्मानित और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा 1992-93 में सम्मानित किया गया। **इनका पता** – ग्राम गुन्सारा (कुम्हेर) राजस्थान है।

इस के अलावा श्री आनंदी लाल आनंद, श्रीमती डॉ. आशा कुलश्रेष्ठ, श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी, श्री कमल सिंह कमल, श्री किशनवीर यादव, श्री करनसिंह कश्यप, श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, श्री गोकुल प्रसाद महार्षि, श्री चन्द्रभान वर्मा 'चन्द्र', श्री चन्द्रकुमार 'सुकुमार', श्री छज्जूराम पारशर, श्री छुट्टन खां साहिल, वैद्य जमनालाल शर्मा 'जमनेश', श्री जगदीश प्रसाद गौतम, श्री ताराचन्द्र प्रेमी, श्री दुर्गाशंकर 'मधु', डॉ. दाऊदयाल गुप्ता, श्री दामोदर लाल 'सुदामा', श्री देवकीनन्दन शास्त्री, श्री दुलीचन्द्र लोघा, श्री धनेश फक्कड़, श्री नत्थीलाला नटवर, ठाकुर श्री नाहर सिंह, श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी, वैद्य नंदकिशोर 'किशोर', श्री प्रभु दयाल 'दयालु', श्रीमती प्रमिला गंगल, श्री पूरणलाल गहलोदत, श्री बालकृष्ण थोलम्बिया, श्री बालीराम शर्मा, श्री वनवारीलाल सोनी, श्री बिहारीशरण पारीक, श्री ब्रजबिहारी शर्मा 'सुरीला', श्री ब्रजबिहारी वशिष्ठ 'बिरजो', श्री भूरीलाल, श्री भंवर स्वरूप भँवर, श्री भीखाराम भीनगा, श्री भगवान ब्रजवासी, श्री भूपेन्द्र भरतपुरी, श्री मुंशी मटोलसिंह, श्री मोहनलाल मधुकर, श्री माधव प्रकाश 'माधव', श्री मेवाराम कटारा, श्रीमती यशोधरा जागवत, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश मिश्र', श्री रामकिशन सैनी 'दुश्मन', श्री रघुनाथ 'चित्रेश', श्री रामशरण पीतलिया, श्री रामबाबू शुक्ल, श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी, श्री रामबाबू रघुराय, पटवारी श्री रामजी लाल शर्मा, श्री रामदास 'दास', श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा श्री राजेन्द्र सिंह गुर्जर, श्रीमती विद्यारानी, श्री वरुण चतुर्वेदी, श्रीमती विनोद कुमारी 'किरन', श्री विष्णुदत्त शर्मा, श्री विट्ठल पारीक, डॉ. श्रीमती सुषमा शर्मा, श्री श्याम साहू, श्री साथी सज्जन सिंह, श्री सर्वोत्तमलाल त्रिवेदी 'लघु' श्री श्रीनिवास ब्रह्मचारी 'श्रीपति', श्रीमती शारदा पाठक, श्रीमती शान्ति साधिका, श्री सोहन प्रकाश 'सोहन', श्री सत्येन्द्र भट्ट 'सत्य', श्री सोहनलाल शर्मा हीरालाल शर्मा 'सरोज', श्री हरिमोहन शर्मा, श्री विष्णु कुमार गौड़, आदि ब्रजभाषा कवियों ने राजस्थान की भूमि पर ब्रजभाषा काव्य के माधुर्य को बनाये रखने में अपना योगदान दिया जिसको अपनी वाणी और लेखनी द्वारा भावों को प्रकट किया। जिस में काव्य परम्परा का निर्वाह करते हुए कवियों ने

आधुनिकता के सुरों को भी वर्णित किया जिसमें भक्ति के विभिन्न रूप, श्रृंगार के विभिन्न रूप और आधुनिकता के विभिन्न स्वरूपों को अलग-अलग तरह से जैसे दोहा, छन्द, कुण्डलियाँ, सवैया, कवित्त, भजन, ग़ज़ल और कविता आदि विभिन्न तरह से प्रस्तुत किया और ब्रजभाषा को उच्च आयाम तक पहुँचाया।

अंत में कहा जा सकता है कि आधुनिक काल के राजस्थानी ब्रजभाषा कवियों का परिमाण इतना अधिक है कि इनका उल्लेख करते हुए सुखद आश्चर्य होता है इसका बहुत सारा श्रेय राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी को है जिसके तहत स्थापित ब्रजभाषा साहित्यकारों को प्रतिष्ठा मिली उनके सृजन को प्रकाशन मिला तथा नवादित अनेक कवियों को भी प्रकाश में लाया गया जो श्रेष्ठ ब्रजभाषा कवि के रूप में उभर रहे हैं।

एक और सशक्त ब्रजभाषा का मंच नाथद्वारा में है जहाँ हिन्दी साहित्य मण्डल के संस्थापक तथा प्रधान मंत्री श्री भगवती प्रसाद देवदरा ब्रजभाषा साहित्य की मशाल जलाए हुए है. नाथद्वारा एक मात्र ऐसा उल्लेखनीय स्थान है जहाँ प्रत्येक वर्ष एक मात्र ब्रजभाषी-कवि सम्मेलन सम्पन्न होता है तथा ब्रज भाषा के कवियों को सम्मानित किया जाता है, इस सम्मान समारोह में प्रान्तवाद या आंचलिकवाद का सकुंचन भी नहीं है। राष्ट्र में जहाँ भी और जो भी ब्रजभाषा साहित्यकार अग्रसर हो रहे है, उनका तटस्थ रूप से स्वागत नाथद्वारा में होता है ।

एक सुखद आश्चर्य का विषय यह भी है कि राजस्थान में वर्तमान में जितने सक्षम और प्रतिभाशाली साहित्यकार सामने आता है उतने स्थानकर्मी साहित्यकार तो ब्रजभूमि में भी नहीं है यहाँ यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि ब्रजभाषा साहित्यकारों की जिस जितनी सक्षम और प्रतिष्ठा पूर्ण आधुनिक श्रृंखला राजस्थान में है उतनी अन्नत्र कहीं नहीं है।

* * *

सन्दर्भ सूचि :

1 पुस्तक : ब्रज साहित्य का इतिहास, संपादक : सत्येन्द्र पृ.सं. 12

2. पुस्तक : ब्रजगंधा, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्गल, पृ.स. 4

3 पुस्तक : ब्रजगंधा, सपादक - गोपाल प्रसाद मुद्गल पृ स. 6

4. पुस्तक : वही, सपादक, वही पृ. 6

5 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ स. - 7